



**III Semester B.A./B.S.W. Examination, April/May 2021  
(CBCS) (F+ R) (2019-20 and Onwards)**

**LANGUAGE HINDI – III**

**Naatak, Sahityakaron ka Parichay Aur Sankshepan**

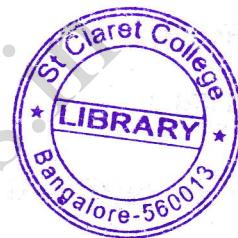
Time : 3 Hours

Max. Marks : 70

**I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या वाक्यांश में लिखिए :**

**(10x1=10)**

- 1) हेमन्त चलता-पूर्जा आदमी की संज्ञा किसे देता है ?
- 2) कोयले की दलाली में हाथ क्या होते हैं ?
- 3) जुगलकिशोर का दूसरा नाम क्या था ?
- 4) हेमन्त खुद को किसका पुजारी मानता है ?
- 5) जुगलकिशोर के पिता के घनिष्ठ मित्र कौन थे ?
- 6) हेमन्त कमला को कार खरीदने के लिए कितने रुपये देता है ?
- 7) सदानन्द कहाँ काम करता था ?
- 8) हेमन्त से राजीव कितने साल छोटा था ?
- 9) 'न्याय की रात' नाटक के नाटककार कौन है ?
- 10) हेमन्त का सामान किस स्टेशन पर उतार दिया गया था ?



**II. किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :**

**(2x7=14)**

- 1) 'अजी जनाब अपने को फेल मानने वाले और होंगे। यह तो जिन्दगी है। जिन्दगी में ऊँच-नीच तो आता ही रहता है।'
- 2) 'मुझे कहाँ मालूम था कि मेरे पिताजी के किन-किन मित्रों के नाम में 'खुल जा सिमसिम' वाली शक्ति है।'
- 3) 'यह दुनिया कमजोरों के लिए नहीं है। दया, ममता, करुणा इन सबको मैं कमजोरी मानता हूँ। शक्ति की स्थिति, प्रमाण और निरन्तरता के लिए मैं हिंसा और अपहरण को अपरिहार्य मानता हूँ।'

P.T.O.



III. 'न्याय की रात' नाटक का सारांश लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (1x16=16)

अथवा

'मनुष्य के जीवन की सबसे बड़ी ट्रेजडी यही है कि वह खुद अपना सबसे बड़ा दुश्मन है।' इस कथन के आधार पर हेमन्त का चरित्र-चित्रण कीजिए।

IV. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (2x5=10)

- 1) जुगलकिशोर
- 2) सदानन्द
- 3) राजीव।

V. किसी एक साहित्यकारों का जीवन-परिचय लिखिए : (1x10=10)

- 1) प्रेमचन्द्र
- 2) नासिरा शर्मा।

VI. निम्नलिखित गद्यांश का शीर्षक देते हुए एक तिहाई शब्दों में संक्षेपण कीजिए : (1x10=10)

यह देश हमारे पूर्वजों का परम आराध्य रहा है। उनकी सभी साधनाएँ, सभी उद्योग, सभी कामनाएँ देश को सुखी और समुन्नत बनाए रखने के लिए हुआ करती थी। इस प्रकार उनकी देशभक्ति चरमकोटि की थी। उनकी राष्ट्रीयता देश की मिट्ठी और जल तक को परम आराध्य मानती थी। वहीं परम्परा आज भी रूढ़ि रूप में विद्यमान है। हम अब भी गंगा, जमुना आदि नदियों के पवित्र जल का पान करते हैं। उनकी मिट्ठी को श्रद्धापूर्वक खाते हैं। किन्तु इसके भीतर छिपे हुए रहस्य (राष्ट्रभक्ति) को नहीं समझते। देश को अखंड रखने के लिए हमारे पूर्वजों ने अपने देश की समस्त नदियों को तीर्थ या दैवी-रूप में मानकर उनकी प्रतिदिन उपासना और स्मरण करने का धार्मिक नियम बनाया था, जो अब भी प्रचलित है। वेदों से लेकर काव्यों तक जितने भी शास्त्र है, सभी इस देश-सम्बन्धी एकता की नीति को धर्म का रूप दिया गया है।